14

ह्रास

व्यवसाय की सम्पत्तियों पर व्यय जैसे फर्नीचर, फिक्सचर एवं दुकान की फिटिंग, मोटर कार, मशीन और औजार ये सभी वर्ष के न तो सामान हैं और न ही खर्चे। इस प्रकार के व्यय व्यवसाय को बहुत वर्षों तक सेवाएं प्रदान करते हैं और इसलिए ये स्थायी सम्पत्तियां कहलाते हैं। यदि स्थायी सम्पत्तियों पर व्यय किसी भी एक साल के लाभ में से घटाया जाए, तो यह गलत हो जाएगा। जबकि उसका फायदा व्यवसाय में एक से अधिक वर्षों तक मिलता है। सही तो यह रहेगा कि उनकी लागत को व्यवसाय के लिए उनके उपयोगी वर्षों में बांट दिया जाए। स्थाई सम्पत्तियों की लागत के जिस भाग को प्रति वर्ष व्यय माना जाएगा वह ह्रास कहलाता है।

इस अध्याय में आप ह्रास को लगाने की विधि और उसके अर्थ के बारे में जानेंगे और ह्रास को खातों की किताबों में अभिलेखित करना सीखेंगे। साथ ही स्थायी सम्पत्ति खाते को तैयार करना भी सीखेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- ह्रास की अवधारणा और अर्थ को समझ सकेंगे;
- ह्रास के कारणों का वर्णन कर पाएंगे;
- ह्रास के उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे;
- ह्रास को प्रभावित करने वाले कारक बता सकेंगे;
- ह्रास लगाने की विधियों को समझ सकेंगे एवं
- स्थायी सम्पत्ति खाता तैयार कर पाएंगे जिसमें प्रत्येक वर्ष के ह्रास की राशि को दर्शाया गया हो।

14.1 हास का अर्थ

आप पहले से ही सम्पत्तियों और देनदारियों के अर्थ को जानते हैं। सम्पत्तियों को मुख्यत: दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है, चालू सम्पत्तियाँ (नकद, देनदार या ग्राहकों का शेष, माल और सामग्री का स्टॉक) और स्थायी सम्पत्तियाँ (भवन, फर्नीचर एण्ड फिक्सचर्स, मशीन, प्लांट, मोटर वाहन)।

स्थायी सम्पत्तियाँ लम्बे समय तक की सम्पत्तियाँ कहलाती हैं, क्योंकि वे व्यवसाय को एक वर्ष से अधिक वर्षों तक फायदा पहुँचाती हैं। अधिकतर स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में समय व्यतीत होने के साथ उनके प्रयोग में कमी आती है तथा किसी नए अविष्कार के होने, बदलते फैशन आदि कारणों से भी कमी होती है। इसलिए उनके उपयोगी जीवन काल के समाप्त होने पर उनको बदलते रहना चाहिए। इसलिए स्थायी सम्पत्ति की कीमत उसके उपयोगी जीवन काल में बांट दी जाती है। प्रत्येक वर्ष के भाग को उस वर्ष का ह्रास माना जाता है।

उदाहरण के लिए एक कार्यालय के लिए कुर्सी ₹ 2,500 में खरीदी और यह अनुमान लगाया कि दस साल बाद यह बेकार हो जाएगी। कुर्सी के उपयोगी जीवन काल के दस वर्षों में उसकी लागत के ₹ 2,500 को बांट दिया जाएगा। प्रतिवर्ष के भाग की गणना निम्न प्रकार से की जाएगी।

$$\text{हास} = \frac{\text{सम्पत्ति की लागत - अवशेष मूल्य (अगर है तो)}}{\text{सम्पत्ति का जीवन}}$$

$$\frac{₹\ 2{,}500}{10} = ₹\ 250$$

इसलिए ₹ 250 प्रत्येक वर्ष का हास व्यय है।

इस प्रकार से हास एक व्यय है, जो साल के दौरान स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में होने वाली कमी है। यह निम्न कारणों से होता है।

- इसके प्रयोग के कारण एवं समय व्यतीत होने के साथ–साथ सामान्य घिसावट एवं टूट–फूट।
- टैक्नोलॉजी, फैशन, तथा अन्य बाजार की स्थितियों के रूचि बदलने के कारण प्रचालन से बाहर होना।

14.2 हास के कारण

निम्नलिखित कारणों से सम्पत्तियों में हास हो जाता है :

(i) सामान्य घिसावट

अ) इस्तेमाल करने के कारण : प्रत्येक सम्पत्ति का एक जीवन होता है, जिसमें इसका प्रयोग होता है तथा यह उत्पादन करती है या सेवा देती है। यदि किसी सम्पत्ति का इस्तेमाल लगातार होता रहता है तो उसके मूल्य में कमी आ जाती है। जैसे कि एक साईकिल के लगातार चलने और इस्तेमाल करने से उनके कार्य करने की क्षमता और कुशलता में कमी आ जाती है।

ब) समय व्यतीत होने के कारण : जैसे–जैसे समय व्यतीत होता है, प्राकृतिक तत्वों जैसे– हवा, रोशनी, बारिश इत्यादि वैज्ञानिक कारणों से भी सम्पत्तियों के भौतिक रूप से कमी के कारण उसकी की कीमत में कमी आती है। जैसे फर्नीचर को चाहे हमने उसे इस्तेमाल भी नहीं किया हो, समय व्यतीत होते–होते उसकी कीमत में कमी आ जाती है।

(ii) अप्रचलन

अ) नए एवं श्रेष्ठ उपकरणों के विकास के कारण : कभी–कभी पुरानी स्थाई सम्पत्तियों को इनमें से किसी एक कारण से उनके वास्तव में अनुपयोगी हो जाने से पहले ही, उपयोग में लाना बंद कर दिया जाता है। अच्छे औजार मशीनों के आने पर कम कीमत पर माल का उत्पादन होता है; इस तरह से यह पुराने औजारों को कीमत रहित कर देते हैं। क्योंकि वो ऊँची कीमत पर माल का उत्पादन करते हैं तथा इसे प्रतियोगी नहीं रहने देते। जैसे डीजल और इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव आने से भाप का इंजन बेकार हो गया।

ब) फैशन, स्टाइल, रूचि अथवा बाजार की स्थिति के बदलने के कारण : वस्तुओं और सेवाओं की मांग में कमी सम्पत्तियों को अप्रचलित कर देती है। जो फैशन, स्टाइल, रूचि या बाजार की स्थिति में परिवर्तन के कारण का ही परिणाम हो सकता है। उन सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी आ जाती है, जो उन वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में लगी थी, जिनकी अब कोई मांग नहीं है, जैसे फैक्ट्रियां या मशीन जो पुराने फैशन के हैट, जूते, फर्नीचर आदि बनाती थी।

इन कारणों से स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में हुई हानि का कारण अप्रचलन कहलाता है और यह ह्रास के रूप में व्यय माना जाता है।

14.3 ह्रास के उद्देश्य

सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

i) **व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति दर्शाना :** स्थाई सम्पत्तियों का प्रभावपूर्ण उपयोगी जीवन होता है, जिसमें इसका मितव्ययी प्रचालन किया जा सकता है। ह्रास स्थाई सम्पत्ति के मूल्य में निरन्तर कमी को कहते हैं। सम्पत्तियों के निरन्तर प्रयोग करने

के कारण उनके मूल्य में कमी हो जाती है। यदि हास की व्यवस्था नहीं की जाती है, तो लाभ हानि खाता किसी एक लेखा वर्ष में अर्जित सही लाभ को नहीं दर्शाएगा तथा स्थिति विवरण (Balance-Sheet) में सम्पत्तियाँ बढ़े हुए मूल्य पर लिखी जाएँगी। इस प्रकार स्थिति–विवरण से व्यापार की वित्तीय स्थिति का ठीक ज्ञान नहीं हो सकेगा। यदि वर्ष दर वर्ष हास की अनदेखी की जाती है तो सम्पत्ति के पूर्ण रूप से क्षय हो जाने पर व्यवसायी व्यवसाय को सरलता से नहीं चला पाएगा।

टिप्पणी

ii) **सम्पत्ति का पुनर्स्थापन करने के लिए व्यापार में कोष स्थापित करना :** शुद्ध लाभ स्वामी द्वारा व्यवसाय में लगाई पूँजी का प्रतिफल होता है, जिसे वह नकद रूप में निकाल सकता है। यदि हास लगाया जाएगा तो इससे शुद्ध लाभ कम हो जाएगा और स्वामी द्वारा निकाली गई राशि भी कम हो जाएगी और हास के बराबर की नकदी व्यवसाय में ही रह जाएगी और इस सम्पूर्ण राशि से स्वामी एक नई सम्पत्ति को स्थापित करने के योग्य हो जाएगा।

पाठगत प्रश्न 14.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. हास स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में ___________ वर्णित करती है।

ii. सम्पत्ति के अवशेष मूल्य का अभिप्राय वह ___________ जिसपर स्थायी सम्पत्ति को ___________ पर बेचा जाता है।

iii. हास को ज्ञात करने के लिए सम्पत्ति के लागत मूल्य में से अवशेष मूल्य को घटाकर ___________ से भाग देते हैं।

iv. अप्रचलन स्थायी सम्पत्तियों की ऐसी स्थिति है, जो ___________ फैशन, रूचि और अन्य बाजार की स्थिति के बदलने के कारण पैदा होती है।

14.4 हास को प्रभावित करने वाले कारक

नीचे सम्पत्ति पर लगाए जाने वाले हास की राशि को प्रभावित करने वाले कारक दिए गए हैं :

i) **सम्पत्ति का लागत मूल्य :** सम्पत्ति की लागत, सम्पत्ति की क्रय राशि होती है और उसमें वे समस्त व्यय जुड़े होते हैं, जो उस सम्पत्ति को इस्तेमाल करने से पहले होते हैं। उदाहरण के लिए सम्पत्ति को उसके उपयोग स्थल तक लदवाने व उतारने में हुए व्यय, गाड़ी भाड़ा, किराया, स्थापना व्यय। इसको खड़ा करने या इसके एसेम्बल करने पर व्यय।

ii) **सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल :** सम्पत्ति कितने वर्षों तक काम आती रहेगी यही उसका उपयोगी जीवन काल है।

iii) **अवशेष मूल्य :** सम्पत्ति जब कार्य के योग्य नहीं रहेगी तो जिस मूल्य पर वह बेची जाएगी, यह कबाड़ का मूल्य अवशिष्ट मूल्य है।

iv) **सम्पत्ति का ह्रासित मूल्य :** सम्पत्ति की लागत मूल्य में से सम्पत्ति के अवशिष्ट मूल्य को घटाकर सम्पत्ति का ह्रासित मूल्य ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण 1

एक जेनरेटर ₹ 5,00,000 का खरीदा था। ₹ 1,500 क्रेन ओपरेटर को ट्रक पर लदवाने के दिए, ₹ 7,000 जेनरेटर को फैक्ट्री तक पहुँचाने के लिए दिए। ₹ 2,000 फैक्ट्री साइट पर पहुँचने पर उसको उतरवाने के लिए दिए। यह अनुमान लगाया कि जनरेटर 10 वर्षों तक चलेगा। उसके बाद यह ₹ 60,000 में बिक जाएगा। जेनरेटर के ह्रासित मूल्य की गणना कीजिए।

सम्पत्ति का लागत मूल्य :	क्रय मूल्य	₹ 5,00,000
	लदवाने का व्यय	₹ 1,500
	परिवहन	₹ 7,000
	उतरवाने का व्यय	₹ 2,000
	कुल	**₹ 5,10,500**

जेनरेटर का उपयोगी जीवन काल 10 साल है

अवशेष मूल्य	₹ 60,000
जेनरेटर का ह्रासित मूल्य=	₹ 5,10,500 – ₹ 60,000
=	₹ 4,50,500

14.5 ह्रास लगाने की विधियां

ह्रास लगाने की प्रचलित पद्धतियां हैं : (1) सरल रेखा पद्धति एवं (2) ह्रासित शेष पद्धति।

(1) सरल रेखा पद्धति

इस पद्धति के अनुसार ह्रास की राशि सालों–साल एक जैसी रहती है। माना, अगर एक सम्पत्ति का लागत मूल्य ₹ 1,00,000 है और उसपर स्थायी रूप से 10% की दर से ह्रास लगाना है। तब ₹ 10,000 प्रत्येक वर्ष ह्रास के अपलिखित होंगे। इसलिए इस विधि को ''स्थायी किश्त विधि'' या ''मूल लागत विधि'' कहते हैं। इस विधि के अनुसार, प्रत्येक वर्ष निम्न तरीके से राशि निकालकर अपलिखित कर देंगे :

$$\textbf{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{\textbf{सम्पत्ति का लागत मूल्य - अवशेष मूल्य}}{\textbf{अनुमानित जीवन अवधि}}$$

सम्पत्ति के लागत मूल्य में से उसके अवशेष मूल्य को घटाकर उसे उसके अनुमानित जीवन अवधि से भाग कर दिया जाता है।

उदाहरण के लिए : एक मशीन ₹ 1,20,000 की खरीदी। उसका अनुमानित जीवन काल 10 साल है। उसका अवशेष मूल्य ₹ 20,000 है। एक साल के ह्रास की गणना नीचे की गई है :

$$\textbf{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{₹\ 1{,}20{,}000 - ₹\ 20{,}000}{10} = ₹\ 10{,}000$$

यदि उसका अवशेष बेचा नहीं जा सकता या उसके अवशेष से कोई पैसा वसूल नहीं किया जा सकता तो तब एक वर्ष का ह्रास होगा :

$$\textbf{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{₹\ 1{,}20{,}000}{10} = ₹\ 12{,}000$$

इस विधि के अनुसार ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष एक जैसी ही रहेगी। इसलिए यह विधि सरल रेखा पद्धति, स्थायी किश्त पद्धति या मूल लागत विधि कहलाती है।

उदाहरण 2

एक मशीन 1 जनवरी 2011, को ₹ 1,00,000 में खरीदी गई। उसका जीवनकाल 10 वर्ष है। अपने जीवन काल को पूरा करने के पश्चात मशीन के अवशेष से कुछ भी राशि प्राप्त नहीं होगी। यह निश्चय किया गया कि मशीन पर सरल रेखा पद्धति से 10% का ह्रास लगाया जाएगा।

मशीन के जीवन अवधि में प्रत्येक वर्ष के ह्रास की राशि की गणना कीजिए।

हल :

वर्ष	ह्रास की दर	ह्रास की राशि (₹)
2011	10%	10,000
2012	10%	10,000
2013	10%	10,000
2014	10%	10,000
2015	10%	10,000
2016	10%	10,000
2017	10%	10,000

2018	10%	10,000
2019	10%	10,000
2020	10%	10,000

ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष समान रहेगी। इसलिए यह विधि ''सरल रेखा पद्धति'' या ''स्थायी किश्त पद्धति'' या ''मूल लागत पद्धति'' कहलाती है।

सरल रेखा पद्धति के गुण

i) **सरलता :** ह्रास की गणना करने की यह पद्धति बहुत सरल है। इसलिए यह बहुत प्रसिद्ध है। इसमें ह्रास की राशि की गणना एक बार कर ली जाती है, तत्पश्चात प्रत्येक वर्ष में वही राशि अपलिखित करनी होती है। इसलिए यह विधि सरल और गणना करने में आसान होती है।

ii) **सम्पत्तियों का मूल्य शून्य होना :** इस पद्धति से ह्रास का आयोजन करते–करते अन्तिम वर्ष में सम्पत्ति का मूल्य स्वतः ही शून्य अथवा अवशेष के बराबर हो जाता है। दूसरे शब्दों में खाता पुस्तकों में किसी सम्पत्ति का मूल्य उसके जीवन काल की समाप्ति पर या तो शून्य हो जाता है या फिर अवशेष मूल्य के बराबर हो जाता है।

सरल रेखा पद्धति के दोष

i) **गणना करने में कठिनाई :** जब एक से अधिक मशीनें अपने अलग–अलग जीवन काल के साथ होती है, तो ह्रास की गणना करना बहुत मुश्किल हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक मशीन पर अलग से ह्रास की गणना करनी पड़ेगी।

ii) **न्याय विरूद्ध/तर्कहीन :** यह हम भली भांति जानते हैं कि जैसे–जैसे सम्पत्ति पुरानी होती है, उस पर मरम्मत और रख–रखाव का व्यय बढ़ जाता है। इस प्रकार ह्रास+मरम्मत व्यय के रूप में लाभ–हानि खाते पर कुल भार पुराने वर्षों की अपेक्षा आने वाले वर्षों में अधिक होगा। यह तर्कहीन होगा क्योंकि सम्पत्ति की कुशलता और कार्य क्षमता पहले अधिक होती है और बाद के वर्षों में कम हो जाती है।

उदाहरण 3

X लिमिटेड ने 1 अप्रैल, 2014 को एक मशीन ₹ 1,00,000 कीमत वाली खरीदी। जिसका अनुमानित जीवन काल 10 वर्ष था। यह अनुमान लगाया गया कि 10 वर्षों के अंत में उसका अवशेष मूल्य ₹ 10,000 होगा। लाभ–हानि खाते में लिखी जाने वाली प्रतिवर्ष की ह्रास की राशि निकालिए। प्रत्येक वर्ष का ह्रास ज्ञात करने की दर भी निकालिए।

हल :

इस प्रश्न में दी गई सूचनाओं से ह्रास की राशि जिसे लाभ–हानि खाता में लिखना है, की गणना इस प्रकार से की जाएगी :

i. ह्रास की राशि की गणना

$$\text{वार्षिक ह्रास} = \frac{\text{मशीन की लागत - अनुमानित अवशेष मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवन अवधि}}$$

$$\frac{₹\ 1{,}00{,}000 - ₹\ 10{,}000}{10} = ₹\ 9{,}000$$

ii. ह्रास की दर की गणना

$$\text{ह्रास की दर} = \frac{\text{वार्षिक ह्रास राशि X 100}}{\text{सम्पत्ति का लागत मूल्य}}$$

$$= \frac{9{,}000 \text{ X } 100}{1{,}00{,}000} = 9\%$$

उदाहरण 4

सलमान एण्ड उस्मान ब्रदर्स ने 1 जुलाई, 2014 को एक मशीन ₹ 70,000 की खरीदी और ₹ 5,000 उसकी स्थापना पर व्यय किए। फर्म ने 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति के अनुसार ह्रास को अपलिखित किया। प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को खाते बन्द कर दिए जाते हैं। मशीन और ह्रास खातों को तीन वर्षों के लिए बनाइए।

हल :

मशीन की लागत	=	₹ 70,000
स्थापना लागत	=	₹ 5,000
कुल		**₹ 75,000**

हास की दर = 10%

वार्षिक ह्रास होगा ₹ 75,000 X 10% = ₹ 7,500

ह्रास खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014				2014			
दिस.31	मशीन खाता		3,750	दिस.31	लाभ–हानि खाता		3,750
2015				2015			
दिस.31	मशीन खाता		7,500	दिस.31	लाभ–हानि खाता		7,500
2016				2016			
दिस. 31	मशीन खाता		7,500	दिस.31	लाभ–हानि खाता		7,500

मशीन खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014 जुलाई 1	बैंक खाता		70,000	2014 दिस. 31	ह्रास खाता $70{,}000\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12}$		3,750
जुलाई 1	बैंक खाता		5,000	दिस. 31	शेष आ ले		71,250
			75,000				**75,000**
2015 जन. 1	शेष आ ला		71,250	2015 दिस. 31	ह्रास खाता $75{,}000\times\frac{10}{100}$		7,500
				दिस. 31	शेष आ ले		63,750
			71,250				**71,250**
2016 जन. 1	शेष आ आ		63,750	2016 दिस. 31	ह्रास खाता $75{,}000\times\frac{10}{100}$		7,500
				दिस. 31	शेष आ ले		56,250
			63,750				**63,750**

उदाहरण 5

1 अप्रैल, 2014 को एक कम्पनी ने एक मशीन ₹ 1,00,000 में खरीदी। 1 अक्टूबर, 2016 को एक और मशीन, ₹ 20,000 में खरीदी और ₹ 2,000 उसकी स्थापना पर खर्च किए। प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को खाते बंद किए जाते हैं। ह्रास की वार्षिक दर 10% है। सरल रेखा पद्धति से 5 वर्षों का मशीन खाता बनाइए।

हल

मशीन खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014 अप्रैल 1	बैंक खाता		1,00,000	2015 मार्च 31	ह्रास खाता $1{,}00{,}000\times\frac{10}{100}$		10,000

टिप्पणी

				मार्च 31	शेष आ.ले.		90,000
			1,00,000				**1,00,000**
2015				2016			
अप्रैल 1	शेष आ ला		90,000	मार्च 31	ह्रास खाता		
					$1,00,000 \times \frac{10}{100}$		10,000
				मार्च 31	शेष आ ले		80,000
			90,000				**90,000**
2016				2017			
अप्रैल 1	शेष आ ले		80,000	मार्च 31	ह्रास खाता		11,100
अक्टू. 1	बैंक खाता		20,000		$1,00,000 \times \frac{10}{100}$		
					$22,000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$		
अक्टू. 1	बैंक खाता		2,000	मार्च 31	शेष आ ले		90,900
			1,02,000				**1,02,000**
2017				2018			
अप्रैल 1	शेष आ ला		90,900	मार्च 31	ह्रास खाता		12,200
					$1,00,000 \times \frac{10}{100}$		
					$22,000 \times \frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ ले		78,700
			90,900				**90,900**
2018				2019			
अप्रैल 1	शेष आ ला		78,700	मार्च 31	ह्रास खाता		12,200
					$1,00,000 \times \frac{10}{100}$		
					$22,000 \times \frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ ले		66,500
			78,700				**78,700**
2019							
अप्रैल 1	शेष आ ला		66,500				

उदाहरण 6

1 जनवरी 2014 को एक कम्पनी ने एक प्लांट ₹ 20,000 में खरीदा। उसी वर्ष 1 जुलाई में एक दूसरा प्लांट ₹ 8,000 में खरीदा और ₹ 2,000 उसको स्थापित करने में खर्च हुए।

टिप्पणी

1 जुलाई 2015 को प्लांट जो 1 जनवरी, 2014 में खरीदा था, बेकार हो गया, उसे ₹ 12,500 में बेच दिया। 1 अक्टूबर, 2016 को एक नया प्लांट ₹ 28,000 में खरीदा उसी तारीख में, जो प्लांट 1 जुलाई, 2014 को खरीदा था, ₹ 6,000 में बेच दिया।

प्रत्येक वर्ष उसकी मूल लागत पर 10% की दर से वार्षिक ह्रास ज्ञात कीजिए। प्लांट खाता 2014 से 2016 तक दिखाइए।

हल

प्लांट खाता

नाम | जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014				2014			
जन. 1	नकद खाता		20,000	31 दिस.	ह्रास खाता		
जुलाई 1	नकद खाता		8,000		(i) वार्षिक 2,000		
	नकद खाता (व्यय)		2,000		(ii) अर्द्धवार्षिक 500		2,500
				31 दिस.	शेष आ ले		
					(i) 18,000		
					(ii) 9,500		27,500
			30,000				**30,000**
2015				2015			
जन. 1	शेष आ ला			जुलाई 1	नकद खाता (बेचा)		12,500
	(i) 18,000			जुलाई 1	ह्रास खाता (i)		1,000[1]
	(ii) 9,500		27,500		लाभ–हानि खाता		4,500[1]
				दिस. 1	ह्रास खाता (ii)		1,000
					(10,000 x 10/100 x 1)		
				दिस. 31	शेष आ ले		8,500
					(₹9,500 - ₹1,000)		
			27,500				**27,500**
2016				2016			
जन. 1	शेष आ ला (ii)		8,500	अक्टू. 1	नकद खाता (बेचा)		6,000
अक्टू. 1	नकद खाता (iii)		28,000	अक्टू. 1	ह्रास खाता (ii)		750[2]
				अक्टू. 1	लाभ–हानि खाता (हानि)		1,750
				दिस. 31	ह्रास खाता (iii)		700
					(28,000 x 10/100 x 3/12)		
				दिस. 31	शेष आ ले		27,300
			36,500				**36,500**

नोट : प्लांट के विक्रय पर हानि की गणना

टिप्पणी

(i)	1 जनवरी, 2015 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य [प्लांट (i)]	18,000
	घटाएं : छः महीने का ह्रास = $20{,}000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$	1,000
	1 जुलाई, 2015 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य	17,000
	घटाएं : प्लांट की बिक्री कीमत	12,500
	बिक्री पर हानि	4,500
(ii)	1 जनवरी, 2016 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य [प्लांट (ii)]	8,500
	घटाएं : 9 महीने के ह्रास = $10{,}000 \times \frac{10}{100} \times \frac{9}{12}$	750
	1 अक्टूबर, 2016 को बिके प्लांट का लागत मूल्य	7,750
	घटाएं : बिक्री कीमत	6,000
	प्लांट की बिक्री पर हानि	1,750

पाठगत प्रश्न 14.2

रिक्त स्थान भरो :

i. ह्रास की स्थायी किस्त पद्धति की अवधारणा के अनुसार ह्रास की राशि, सम्पत्तियों पर विभिन्न वर्षों के अन्तर्गत __________ रहती है।

ii. ह्रास लगाने की सरल रेखा पद्धति __________ के नाम से भी जानी जाती है।

iii. सम्पत्तियों की कीमत, सरल रेखा पद्धति से उसकी जीवन अवधि के अन्त में __________ या उसके __________ के बराबर हो जाती है।

iv. सरल रेखा पद्धति के अन्तर्गत लाभ–हानि खाते पर सम्पूर्ण भार पुराने वर्षों की अपेक्षा __________ वर्षों में __________ हो जाता है।

(2) ह्रासित शेष पद्धति

इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति की कीमत प्रतिवर्ष घटती रहती है। ह्रास लगाने की राशि भी प्रतिवर्ष कम होती रहती है। इसमें एक निश्चित प्रतिशत दर से सम्पत्ति पर ह्रास लगाया जाता है। जो किताबों में प्रत्येक वर्ष दिखाया जाता है। इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति खाता कभी भी शून्य नहीं किया जा सकता।

माना, सम्पत्ति की कीमत ₹ 40,000 है और प्रत्येक वर्ष 10% वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित किया जाता है। पहले वर्ष में ह्रास की राशि ₹ 4,000 होगी अर्थात् ₹ 40,000 का 10%। उसका लागत मूल्य घटकर ₹ 36,000 हो जाएगा (₹ 40,000 – ₹ 4,000)। अब अगले वर्ष ह्रास की राशि ₹ 3,600 होगी (₹ 36,000 का 10%)। इसलिए प्रत्येक वर्ष ह्रास की राशि कम हो जाएगी। ह्रास लगाने की इस पद्धति को घटते हुए शेष या ह्रासित शेष पद्धति कहते हैं।

उदाहरण 7

एक मशीन 1 जनवरी, 2014 को ₹ 1,00,000 में खरीदी और उसका जीवन काल 10 वर्ष है। इसके जीवन काल खत्म होने पर इसको कबाड़ मान लिया जाएगा तथा इससे ₹ 4,000 वसूल कर लिया जाएगा। यह निश्चय किया गया कि मशीन पर 10% वार्षिक दर से क्रमागत शेष पद्धति द्वारा ह्रास की गणना की जाएगी।

इस मशीन के जीवनकाल के प्रत्येक वर्ष के ह्रास की गणना कीजिए।

हल

वर्ष	ह्रास की दर	ह्रास की राशि ₹
2014	10%	10,000
2015	10%	9,000
2016	10%	8,100
2017	10%	7,290
2018	10%	6,561
2019	10%	5,905
2020	10%	5,314
2021	10%	4,783
2022	10%	4,305
2023	10%	3,874

इस विधि में ह्रास की राशि प्रतिवर्ष घटती जाती है। इसलिए इस विधि को क्रमागत ह्रास पद्धति या 'घटते हुए शेष पद्धति' या 'ह्रासित शेष पद्धति' कहते हैं।

ह्रासित शेष पद्धति के गुण

लाभ-हानि खाते पर समान भार

प्रारम्भ में सम्पत्ति की उत्पादकता अधिक होती हैं, इसलिए लाभ में इसका योगदान अधिक होता है इसलिए ह्रास के रूप में व्यय भी अधिक लगाया जाना चाहिए।

प्रारम्भ के वर्षों में सम्पत्ति के निरन्तर प्रयोग में आने के कारण मरम्मत व्यय प्रतिवर्ष बढ़ता है तथा इस पद्धति के अन्तर्गत ह्रास राशि निरन्तर घटती रहती है। इन दोनों बातों का सामूहिक प्रभाव यह होता है कि इस विधि के अन्तर्गत ह्रास + मरम्मत के रूप में सम्पत्ति के जीवन काल में प्रत्येक वर्ष लाभ–हानि खाते पर लगभग समान भार पड़ता है।

टिप्पणी

ह्रासित शेष पद्धति के दोष

i) **सम्पत्ति का मूल्य शून्य न होना :** इस पद्धति के अन्तर्गत, सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक कम नही हो सकता, चाहे उसका कोई अवशेष मूल्य न हो।

ii) **जटिलता :** इस पद्धति से, ह्रास की दर को आसानी से निर्धारित नहीं किया जा सकता।

पाठगत प्रश्न 14.3

उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

i. ह्रास, स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में ___________ दर्शाता है।

ii. मशीन पर ह्रास की राशि को ___________ खाते में जमा किया जाता है।

iii. ह्रास की सरल रेखा पद्धति में ___________ पर ह्रास की गणना होती है।

iv. ह्रास की क्रमागत ह्रास पद्धति में ___________ पर ह्रास की गणना होती है।

v. सम्पत्तियों का मूल्य, चाहे उसका कोई अवशेष मूल्य न हो, ह्रास की क्रमागत ह्रास पद्धति में ___________ नहीं हो सकता।

उदाहरण 8

विडसन इंटरप्राइजेज ने 1 अक्टूबर, 2012 को एक मशीन ₹ 1,00,000 में खरीदी। यह निश्चय किया गया कि क्रमागत ह्रास विधि से 20% वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित किया जाएगा। 1 जनवरी, 2015 को एक और मशीन ₹ 40,000 में खरीदी।

30 मार्च 2016 तक का प्लांट एण्ड मशीन खाता तैयार कीजिए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है।

हल :

संयंत्र (प्लांट) और मशीन खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2012				2013			
अक्टू. 1	बैंक खाता		1,00,000	मार्च 31	ह्रास खाता (6 महीने का)		10,000
				मार्च 31	शेष आ ले		90,000
			1,00,000				**1,00,000**

2013 अप्रैल 1	शेष आ ला		90,000	2014 मार्च 31	ह्रास खाते से (90,000 पर)		18,000
				मार्च 31	शेष आ ले		72,000
			90,000				**90,000**
2014 अप्रैल 1	शेष आ ला		72,000	2015 मार्च 31	ह्रास खाता (72,000 पर एक वर्ष का 14,400 तथा 40,000 पर 3 माह का 2,000)		16,400
2015 जन. 1	बैंक खाता		40,000	2015 मार्च 31	शेष आ ले		95,600
			1,12,000				**1,12,000**
2015 अप्रैल 1	शेष आ ला		95,600	2016 मार्च 31	ह्रास खाता (95,600 पर 1 वर्ष का)		19,120
				मार्च 31	शेष आ ले		76,480
			95,600				**95,600**
2016 1 अप्रैल	शेष आ ला		76,480				

उदाहरण 9

1 अप्रैल, 2014 को गंगा ब्रदर्स ने दो मशीनें, प्रत्येक की कीमत ₹ 75,000 है, खरीदीं। 10% की दर से घटते हुए शेष पद्धति से ह्रास लगाया जाएगा। 31 मार्च, 2016 को एक मशीन ₹ 55,000 में बेच दी। एक नया मॉडल ₹ 80,000 की लागत का उसी दिन खरीदा गया। कम्पनी की पुस्तकों में 2014-15 से 2015-16 का मशीन खाता बनाइए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है।

हल

मशीन खाता

नाम | जमा

दिनांक	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि ₹*	*दिनांक*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि ₹*
2014 अप्रैल 1	बैंक खाता		1,50,000	2015 मार्च 31	ह्रास खाता		15,000
				मार्च 31	शेष आ ले		1,35,000
			1,50,000				**1,50,000**

टिप्पणी

2015 अप्रैल 1	शेष आ ला		1,35,000	2016 मार्च 31	हास खाता		13,500
				मार्च 31	बैंक खाता		55,000
2016 मार्च 31	बैंक खाता		80,000	मार्च 31	लाभ–हानि खाता		5,750
				मार्च 31	शेष आ ले		1,40,750
			2,15,000				**2,15,000**
2016 अप्रैल 1	शेष आ.ला.		1,40,750				

नोट : मशीन के विक्रय पर हानि की गणना :

	₹
आरम्भिक लागत	75,000
2015 का हास	–7,500
2015 में पुस्तक मूल्य	67,500
2016 का हास	–6,750
2016 में पुस्तक मूल्य	60,750
घटा बिक्री	–55,000
बिक्री पर हानि	5,750

उदाहरण 10

1 अक्टूबर, 2014 को आकाश ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने एक ट्रक ₹ 8,00,000 की कीमत का खरीदा। 1 अप्रैल, 2016 को ट्रक की दुर्घटना हो गई और वह पूरी तरह टूट गया और बीमा कम्पनी से कुल ₹ 6,00,000 प्राप्त हुए। उसी तारीख को कम्पनी ने ₹ 10,00,000 का एक और ट्रक खरीदा। कम्पनी को 20% की वार्षिक दर से घटते हुए शेष विधि से हास लगाना है। वर्ष 2014 से 2016 तक ट्रक खाता बनाइए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को बंद होता है।

हल :

ट्रक खाता

नाम — जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2014 अक्टू. 1	बैंक खाता		8,00,000	2014 दिस. 31	हास खाता $\left(8,00,000 \times \frac{20}{100} \times \frac{3}{12}\right)$		40,000

				दिस. 31	शेष आ ले		7,60,000
			8,00,000				**8,00,000**
2015				2015			
जन. 1	शेष आ ला		7,60,000	दिस. 31	हास खाता		1,52,000
					$7{,}60{,}000 \times \frac{20}{100}$		
				दिस. 31	शेष आ ले		6,08,000
			7,60,000				**7,60,000**
2016				2016			
जन. 1	शेष		6,08,000	अप्रैल 1	बैंक खाता		6,00,000
अप्रैल 1	लाभ–हानि खाता		22,400	अप्रैल 1	हास खाता		30,400
					$6{,}08{,}000 \times \frac{20}{100} \times \frac{3}{12}$		
अप्रैल 1	बैंक खाता		10,00,000	दिस. 31	हास खाता		1,50,000
					$10{,}00{,}000 \times \frac{20}{100} \times \frac{9}{12}$		
				दिस. 31	शेष आ ले		8,50,000
			16,30,400				**16,30,400**

स्थायी किस्त पद्धति तथा हासित शेष पद्धति में अंतर

अंतर का आधार	*सरल रेखा पद्धति*	*हासित शेष पद्धति*
गणना का आधार	इसमें सम्पत्ति की मूल लागत पर हास की गणना की जाती है।	इसमें प्रथम वर्ष में सम्पत्ति की मूल लागत पर तथा बाद के वर्षों सम्पत्ति के घटते शेष पर हास की गणना की जाती है।
हास की राशि	इसमें हास की राशि प्रतिवर्ष समान रहती है।	इसमें हास की राशि प्रतिवर्ष घटती है।
सम्पत्ति का मूल्य	सम्पत्ति का जीवनकाल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य शून्य हो जाता है।	सम्पत्ति का जीवन काल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य शून्य नहीं हो सकता।
हास और मरम्मत	हास और मरम्मत मिलाकर दोनों की राशि शुरू के वर्षों में कम और बाद के वर्षों में अधिक होती है।	हास और मरम्मत मिलाकर दोनों की राशि प्रतिवर्ष लगभग एकसमान रहती है।

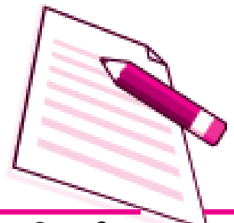

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 14.4

I. निम्न में से कौन से विवरण सही है और कौन से गलत :

i. ह्रास की राशि प्रतिवर्ष सरल रेखा पद्धति में कम होती रहती है।

ii. ह्रास की राशि क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार समस्त वर्षों में एक समान रहती है।

iii. सरल रेखा पद्धति में सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक कम हो जाता है।

iv. क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक नहीं घट सकता।

II. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i जिस पर ह्रास लगाया जाता है वह है :

क) माल का स्टॉक ख) चालू सम्पत्ति

ग) स्थायी सम्पत्ति ग) तरल सम्पत्ति

ii. प्रचलन से बाहर शब्द का इस्तेमाल जिनके लिए होता है वह है :

क) सम्पत्तियों की घिसावट

ख) सम्पत्तियों के मूल्य में कमी का होना

ग) औजारों के उत्तम गुण या विकास में सुधार

घ) सम्पत्तियों का जीवन काल और इस्तेमाल के कारण

iii. सरल रेखा पद्धति द्वारा स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने के लिए सम्पत्ति के जिस मूल्य को लिया जाता है, वह है :

क) लागत मूल्य ख) घटता हुआ मूल्य

ग) अवशेष मूल्य घ) पुस्तकीय मूल्य

iv. स्थायी सम्पत्तियों पर क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा ह्रास लगाने पर, सम्पत्ति का मूल्य लिया जाएगा।

क) प्रारम्भिक लागत मूल्य ख) घटता हुआ मूल्य

ग) अवशेष मूल्य घ) पुस्तकीय मूल्य

v. ह्रास के लिए राशि की गणना की जाती है :

क) सम्पत्ति की अवशेष मूल्य के राशि को जोड़कर

ख) सम्पत्ति में अवशेष मूल्य की राशि को न जोड़कर

ग) अवशेष मूल्य को सम्पत्ति के मूल्य से कम करके

घ) इनमें से कोई नहीं।

vi. इनमें से कौन सा ह्रास का करण है

क) सामान्य घिसावट   ख) अप्रचलन में होना

ग) सम्पत्ति की कीमत   घ) बाजार मूल्य में कमी या बढ़ोत्तरी

vii. इनमें से कौन सा वार्षिक ह्रास होगा।

क) कुल अवक्षयण + स्थापना व्यय

ख) (कुल लागत – अवशेष मूल्य) ÷ जीवनकाल

ग) (कुल लागत + अवशेष मूल्य)   जीवनकाल

घ) इनमें से कोई नहीं

viii. इनमें से कौन सा तत्व सम्पत्ति के वार्षिक ह्रास को प्रभावित नहीं करताः

क) सम्पत्ति की लागत   ख) सम्पत्ति का अवशेष मूल्य

ग) सम्पत्ति का जीवन काल   घ) सम्पत्ति का वार्षिक रख–रखाव

ix. निम्न में से कौन सी सम्पत्ति पर ह्रास लगाया जाता है :

क) स्टॉक   ख) देनदार   ग) मशीन   घ) भूमि

x. निम्न में से कौन सी सम्पत्ति पर ह्रास नहीं लगाया गया जाएगा :

क) मशीन   ख) संयंत्र   ग) फोटो कॉपीअर   घ) स्टॉक

14.6 सम्पत्ति निस्तारण खाता

यदि किसी सम्पत्ति का कोई भाग बेचा जाता है तो एक नया खाता खोलना अच्छा रहता है, जिसे सम्पत्ति निस्तारण खाता कहते हैं। सम्पत्ति निस्तारण खाते में अभिलेखन दो बातों पर निर्भर करता है :

i. ह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता है।

ii. ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है।

I. जब ह्रास प्रावधान खाता नहीं बनाया जाता है : इस विधि में ह्रास को सीधे सम्पत्ति खाते से अपलिखित कर लिया जाता है। अतः सामान्यतः सम्पत्ति खाता ही बनाया जाता है। ह्रास प्रावधान खाता न बनाने पर रोजनामचा प्रविष्टि निम्नलिखित तरीके से की जायेंगी।

(i) सम्पत्ति के पुस्तक मूल्य को सम्पत्ति निस्तारण खाते में हस्तान्तरित करने पर

सम्पत्ति निस्तारण खाता   नाम
    सम्पत्ति खाता से

(ii) सम्पत्ति का विक्रय करने पर

बैंक खाता   नाम
    सम्पत्ति निस्तारण खाता से

टिप्पणी

(iii) सम्पत्ति के विक्रय पर लाभ होने पर

सम्पत्ति निस्तारण खाता   नाम
    लाभ हानि खाता से

(iv) सम्पत्ति के विक्रय पर हानि होने पर

लाभ हानि खाता   नाम
    सम्पत्ति निस्तारण खाता से

II. जब हास प्रावधान खाता बनाया जाता है : इस विधि में हास सीधे सम्पत्ति खाते से अपलिखित नहीं किया जाता है। एक अवधि की हास की धनराशि हास खाते में नाम और हास प्रावधान खाते में जमा की जाती है। इसमें निम्नलिखित रोजनामचा प्रविष्टि की जाती है :

(i) सम्पत्ति क्रय करने पर

सम्पत्ति खाता   नाम
    रोकड़/बैंक खाता से

(ii) हास अपलिखित करने पर

हास खाता   नाम

    हास प्रावधान खाता से

(iii) हास की धनराशि को लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित करने पर

लाभ हानि खाता   नाम
    हास खाता से

आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति को पुस्तक मूल्य पर सम्पत्ति पक्ष में तथा हास प्रावधान खाते को दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। जैसे–जैसे समय बीतता जाता है हास प्रावधान खाते की धनराशि बढ़ती जाती है। सम्पत्ति का जीवन काल पूर्ण हो जाने पर ये दोनों खाते बन्द कर दिए जाते हैं। बन्द करते समय हास प्रावधान खाता नाम तथा सम्पत्ति खाता जमा कर दिया जाता है और बची हुई धनराशि लाभ हानि खाते में डाल दी जाती है। प्रविष्टि इस प्रकार है–

हास प्रावधान खाता   नाम
    सम्पत्ति खाता से
(हास प्रावधान खाता शेष का सम्पत्ति खाते में हस्तांतरण)

लाभ–हानि खाता   नाम
    सम्पत्ति खाता से
(सम्पत्ति पर हानि)

अथवा

सम्पत्ति खाता नाम
 लाभ–हानि खाता से
(सम्पत्ति पर लाभ)

उदाहरण 11

1 जनवरी 2012 को X लिमिटेड ने चैक द्वारा एक सम्पत्ति ₹ 12,00,000 में खरीदी। 1 जुलाई 2012 को उक्त सम्पत्ति का एक भाग जिसकी लागत ₹ 80,000 थी, ₹ 45,000 में बेच दी तथा उसी तिथि को एक नई मशीन ₹ 1,58,000 की क्रय की। कम्पनी 10% प्रतिवर्ष की दर से स्थाई किस्त पद्धति द्वारा ह्रास लगाती है।

आप उपरोक्त की रोचनामचे में प्रविष्टि कीजिए तथा खाता बही में खतौनी कीजिए यदि :

(i) ह्रास संचय खाता नहीं बनाया जाता है;

(ii) ह्रास संचय खाता बनाया जाता है।

हल

(i) जब ह्रास संचय खाता नहीं बनाया जाता है :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खाता पृ.सं.*	*नाम ₹*	*जमा ₹*
2012				
दिस. 31	मशीनरी खाता नाम		12,00,000	
	बैंक खाता से			12,00,000
	(मशीनरी खरीदी)			
दिस. 31	ह्रास खाता नाम		1,20,000	
	मशीनरी खाता से			1,20,000
	(ह्रास लगाया)			
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम		1,20,000	
	ह्रास खाता से			1,20,000
	(ह्रास लाभ–हानि खाता में हस्तान्तरित किया)			
2013				
दिस. 31	ह्रास खाता नाम		1,20,000	
	मशीनरी खाता से			1,20,000
	(ह्रास लगाया)			

टिप्पणी

दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया)		1,20,000	1,20,000
2014 जुलाई 1	ह्रास खाता नाम मशीनरी खाता से (छः माह का ह्रास लगाया)		4,000	4,000
जुलाई 1	मशीनरी निस्तारण खाता नाम मशीनरी खाता से (मशीन को पुस्तक मूल्य पर मशीनरी निस्तारण खाते में हस्तांतरित किया)		60,000	60,000
जुलाई 1	बैंक खाता नाम मशीनरी निस्तारण खाता से (मशीनरी बेची)		45,000	45,000
जुलाई 1	मशीनरी खाता नाम बैंक खाता से (नई मशीन खरीदी)		1,58,000	1,58,000
दिस. 31	ह्रास खाता नाम मशीनरी खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तांतरित किया)		1,19,900	1,19,900
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम ह्रास खाता से (ह्रास का लाभ–हानि खाते मे हस्तान्तरण)		1,23,900	1,23,900
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम मशीन निस्तारण खाता से (मशीन के बेचने पर हुआ लाभ हस्तान्तरित किया)		15,000	15,000

मशीनरी खाता

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
जन. 1	बैंक खाता	12,00,000	दिस. 31	ह्रास खाता	1,20,000
				शेष आगे ले गये	10,80,000
		12,00,000			12,00,000
2013			2013		
जन. 1	शेष आगे लाये	10,80,000	दिस. 31	ह्रास खाता	1,20,000
			दिस. 31	शेष आगे ले गये	9,60,000
		10,80,000			10,80,000
2014			2014		
जन. 1	शेष आगे लाये	9,60,000	जुलाई 1	ह्रास खाता	
जुलाई 1	बैंक खाता	1,58,000		$80\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12}$	4,000
			जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	
				(80,000 - 20,000)	60,000
			दिस. 31	ह्रास खाता	1,19.900
				शेष आगे ले गये	9,34,100
		11,18,000			11,18,000

मशीन निस्तारण खाता

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013			2013		
जुलाई 1	मशीनरी खाता	60,000	जुलाई 1	बैंक खाता	45,000
			जुलाई 1	लाभ–हानि खाता	15,000
		60,000			60,000

(ii) जब ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है :

रोजनामचा

तिथि	विवरण		खाता पृ.सं.	नाम ₹	जमा ₹
2012					
जन. 1	मशीनरी खाता	नाम		12,00,000	
	बैंक खाता से				12,00,000
	(मशीनरी खरीदी)				
दिस. 31	ह्रास खाता	नाम		1,20,000	
	ह्रास प्रावधान खाता से				1,20,000
	(ह्रास लगाया)				
दिस. 31	लाभ–हानि खाता	नाम		1,20,000	
	ह्रास खाता से				1,20,000
	(ह्रास लाभ–हानि खात में				
	हस्तान्तरित किया)				
2013					
दिस. 31	ह्रास खाता	नाम		1,20,000	
	ह्रास प्रावधान खाता से				1,20,000
	(ह्रास लगाया)				
दिस. 31	लाभ–हानि खाता	नाम		1,20,000	
	ह्रास खाता से				1,20,000
	(ह्रास लाभ–हानि खाते में				
	हस्तान्तरित किया)				
2014					
जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	नाम		80,000	
	मशीन खाता से				80,000
	(मशीन निस्तारण खाते				
	में हस्तान्तरित किया)				
2014					
जुलाई 1	बैंक खाता	नाम		45,000	
	मशीनरी निस्तारण खाता से				45,000
	(मशीनरी बेची)				

जुलाई 1	ह्रास खाता नाम ह्रास प्रावधान खाता से (चालू वर्ष का छमाही ह्रास मशीन निस्तारण पर लगाया)		4,000	4,000
जुलाई 1	ह्रास प्रावधान खाता नाम मशीन निस्तारण खाता से (मशीन के विक्रय पर कुल ह्रास हस्तान्तरित किया)		20,000	20,000
जुलाई 1	मशीन खाता नाम बैंक खाता से (नई मशीन खरीदी)		1,58,000	1,58.000
दिस. 31	ह्रास खाता नाम ह्रास प्रावधान खाता से (शेष मशीनरी पर ह्रास लगाया)		1,19,000	1,19,900
दिस. 31	लाभ–हानि खात नाम ह्रास खाता से (ह्रास लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया)		1,23,900	1,23,900
दिस. 31	लाभ–हानि खाता नाम मशीन निस्तारण खाता से (मशीन के बेचने पर हुई हानि लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित की गई)		15,000	15,000

मशीनरी खाता

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
जन. 1	बैंक खाता	12,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गये	12,00,000
2013			2013		
जन. 1	शेष आगे लाये	12,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गये	12,00,000

2014			2014		
जन. 1	शेष आगे लाये	12,00,000	जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	80,000
जुलाई 1	बैंक खाता	1,58,000	दिस. 31	शेष आगे ले गये	1,78,100
		13,58,000			13,58,000

ह्रास खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
दिस. 31	ह्रास प्रावधान खाता	1,20,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	1,20,000
2013			2013		
दिस. 31	ह्रास प्रावधान खाता	1,20,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	1,20,000
2014			2014		
जुलाई 1	ह्रास प्रावधान खाता	4,000	दिस. 31	लाभ–हानि खाता	1,23,900
	ह्रास प्रावधान खाता	1,19,900			
		1,23,900			1,23,900

ह्रास प्रावधान खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2012			2012		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	1,20,000	दिस. 31	ह्रास खाता	1,20,000
2013			2013		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	2,40,000	जन. 1	शेष आगे लाए	1,20,000
			दिस.31	ह्रास खाता	1,20,000
		2,40,000			2,40,000
2014			2014		
जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	20,000[1]	जन. 1	शेष आगे लाए	2,40,000
			जुलाई 1	ह्रास खाता $(80,000\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12})$	4,000
दिस.31	शेष आगे ले गए	3,43,900			
			दिस. 31	ह्रास खाता	1,19,900
		3,63,900			3,63,900

मशीनरी निस्तारण खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2014			2014		
जुलाई 1	मशीनरी खाता	80,000	जुलाई 1	बैंक खाता	45,000
			जुलाई 1	ह्रास संचय खाता	20,000
			दिस. 31	लाभ–हानि खाता	15,000
		80,000			80,000

नोट : (1) मशीन का ह्रास जो बेची गई है = $80,000 \times \frac{10}{100} \times 2.5 = 20,000$

(2) मशीन का ह्रास जो बेची नहीं है

पुरानी मशीन	=	$11,20,000 \times \frac{10}{100}$	=	1,12,000
नई मशीन	=	$1,58,000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$	=	7,900
				1,19,900

उदाहरण 12

1 अप्रैल 2011 को X लिमिटेड ने एक संयंत्र ₹ 5,00,000 में क्रय किया। 1 जुलाई 2013 को उक्त संयन्त्र का एक भाग जिसका मूल्य ₹ 70,000 था, ₹ 40,000 में बेच दिया तथा उसी तिथि को ₹ 1,00,000 का एक नया संयंत्र क्रय कर दिया गया। ह्रास क्रमागत ह्रास पद्धति के आधार पर 20% प्रतिवर्ष की दर से लगाया जाता है तथा लेखा पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द होती हैं।

संयंत्र खाता, ह्रास संचय खाता तथा संयंत्र निस्तारण खाता बनाइए।

हल

संयंत्र खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2011			2011		
अप्रैल 1	बैंक खाता	5,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गए	5,00,000

टिप्पणी

2012			2012		
जन. 1	शेष आगे लाए	5,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गए	5,00,000
2013			2013		
जन. 1	शेष आगे लाए	5,00,000	जुलाई 1	मशीन निस्तारण खाता	70,000
जुलाई 1	बैंक खाता	1,00,000	दिस. 31	शेष आगे ले गए	5,30,000
		6,00,000			6,00,000

हास प्रावधान खाता

नाम / जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2011			2011		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	75,000	दिस. 31	हास खाता	75,000
2012			2012		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	1,60,000	जन. 1	शेष आगे लाए	75,000
			दिस. 31	हास खाता	85,000
		1,60,000			1,60,000
2013			2013		
जुलाई 1	संयंत्र निस्तारण खाता	74,160[1]	जन. 1	शेष आगे लाये	1,60,000
			जुलाई 1	हास खाता	4,760
दिस. 31	शेष आगे ले गए	2,06,080	दिस. 31	हास खाता	68,480
		2,33,240			2,33,240

संयन्त्र निस्तारण खाता

नाम / जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013			2013		
जुलाई 1	संयन्त्र खाता	70,000	जुलाई 1	बैंक खाता (विक्रय)	40,000
			जुलाई 1	हास प्रावधान खाता	27,160
			जुलाई 1	लाभ–हानि खाता (हानि)	2,840
		70,000			70,000

नोट : (1) संयन्त्र के विक्रय पर ह्रास

2011 में $70,000 \times \frac{9}{12} \times \frac{20}{100}$ = 10,500

2012 में $59,500 \times \frac{20}{100}$ = 11,900

2013 में $47,600 \times \frac{20}{100} \times \frac{6}{12}$ = 4,760

27,160

(2) संयन्त्र के शेष का ह्रास

कुल संयन्त्र 5,30,000

घटाया जुलाई 2013

1,00,000 पर ह्रास 1/2 वर्ष @ 20% 10,000

पुराना संयन्त्र ₹ 43,000

बकाया संयन्त्र =

4,30,000 − (1,60,000 + 4,760 + 68,480 − 27,160)

$= 2,92,400 \times \frac{20}{100}$

= 68,480

उदाहरण 13

1 जनवरी 2013 को मैसर्स अतुल एंड ब्रदर्स ने 5 वाशिंग मशीन ₹ 15,000 प्रति की दर से खरीदी। 1 जनवरी 2014 को एक वाशिंग मशीन ₹ 12,500 में बेच दी। मशीनरी पर ह्रास 10% की दर से स्थायी किस्त पद्धति से काटा जाता है है। वाशिंग मशीन खाता, ह्रास प्रावधान खाता और ह्रास खाता को दो वर्षों के लिए बनाइए। पुस्तकें प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द होती है।

हल

वाशिंग मशीन खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013 जन. 1	बैंक खाता	75,000	2013 दिस. 31	शेष आगे ले गए	75,000
		75,000			75,000

2014			2014		
जन. 1	शेष आगे लाए	75,000	जन. 1	मशीन निस्तारण खाता	15,000
				शेष आगे ले गए	60,000
		75,000			75,000

हास प्रावधान खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2013			2013		
दिस. 31	शेष आगे ले गए	7,500	दिस. 31	हास खाता	7,500
2014			2014		
जन. 1	वाशिंग मशीन निस्तारण खाता	1,500	जन. 1	शेष आगे लाए	7,500
			दिस. 31	हास खाता	6,000
	शेष आगे ले गए	12,000			
		13,500			13,500

वाशिंग मशीन निस्तारण खाता

नाम | जमा

तिथि	विवरण	राशि ₹	तिथि	विवरण	राशि ₹
2014			2014		
जन. 1	वाशिंग मशीन खाता	15,000	जन. 1	हास प्रावधान खाता	1,500
			जन. 1	बैंक खाता	12,300
			जन. 1	लाभ हानि खाता	1,000
		15,000			15,000

नोट : 1. जन. 2014 को एक मशीन की पुस्तक मूल्य =

$$15{,}000 - 1{,}500 = 13{,}500$$

2. मशीन के विक्रय पर हानि = 13,500 − 12,500 = 1,000

3. 4 मशीनों का हास $60{,}000 \times \frac{10}{100} = 6{,}000$

आपने क्या सीखा

- टूट–फूट, काल समाप्ति, अप्रचलन तथा अन्य कारणों से किसी सम्पत्ति के मूल्य में जो कमी होती है, उसे ह्रास कहते हैं।
- **ह्रास के कारण**
  - * उपयोग किए जाने पर घिसावट एवं टूट फूट
  - * समय व्यतीत होने के कारण मूल्य में कमी
  - * उन्नत तकनीक के कारण अप्रचलन।
- **ह्रास के उद्देश्य**
  - * व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति को दर्शाना।
  - * व्यवसाय में नई सम्पत्ति का पुनर्स्थापन करने के लिए कोष बनाना।
- **ह्रास लगाने की पद्धतियां**
  - * सरल रेखा पद्धति
  - * क्रमागत ह्रास पद्धति
- **सरल रेखा पद्धति के गुण**
  - * सरलता
  - * सम्पत्तियों का पूर्णरूप से अपलिखित करना
- **सरल रेखा पद्धति के दोष**
  - * गणना करने में कठिनाई
  - * तर्कहीनता
- **क्रमागत ह्रास पद्धति के गुण**
  - * लाभ–हानि खाते पर एक समान भार
  - * सम्पत्तियों का मूल्य कभी भी शून्य नहीं लिखा जाता।
- **क्रमागत ह्रास पद्धति के दोष**
  - * सम्पत्तियों को पूर्णरूप से अपलिखित नहीं किया जाता
  - * जटिलता

पाठान्त प्रश्न

1. ह्रास क्या है? ह्रास के प्रावधान के विभिन्न उद्देश्य लिखो।

टिप्पणी

2. ह्रास को लगाने के कारण क्या हैं?

3. ह्रास को लगाने की दो पद्धतियाँ कौन सी है? उनके गुण–दोषों का वर्णन कीजिए।

4. ह्रास लगाने के प्रमुख उद्देश्य क्या है?

5. ह्रास की सरल रेखा पद्धति तथा क्रमागत ह्रास पद्धति में अन्तर बताइए।

6. कृष्णमोहन लिमिटेड ने 1 अक्टूबर, 2008 को एक मशीन ₹ 90,000 की खरीदी और उसकी स्थापना करने में ₹ 10,000 रूपये और खर्च किए। ह्रास उसके लागत मूल्य पर 10% की दर से लगाया जाता है। कम्पनी की पुस्तकों में तीन वर्षों का मशीन खाता बनाइए। यदि खाते 31 मार्च को बन्द होते हैं।

7. 1 अप्रैल, 2008 को आसाही लिमिटेड ने ₹ 80,000 में एक मशीन खरीदी और ₹ 20,000 उसकी स्थापना करने व मरम्मत करने में खर्च किए। 30 सितम्बर, 2011 को वह मशीन ₹ 60,000 में बेच दी। वर्ष 2008 से 2011 तक का मशीन खाता तैयार कीजिए, यदि ह्रास 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति द्वारा लगाया जाता है।

8. अजय कुमार एण्ड कम्पनी ने 1 अप्रैल, 2007 को ₹ 20,000 में एक मशीन खरीदी। मशीन पर 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति द्वारा ह्रास लगाया जाता है। 1 अक्टूबर 2010 को मशीन को ₹ 8,000 में बेच दिया। मशीन खाता बनाइए यदि खाते 31 मार्च को बंद होते हैं।

9. 1 जनवरी, 2008 को एक संयंत्र ₹ 80,000 में खरीदा। यह अनुमान लगाया जाता है कि उसका अवशेष मूल्य उसके जीवन काल के 10 वर्षों के अंत में ₹ 27,894 होगा। ह्रास 10% वार्षिक की दर से क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा ज्ञात करना है। कम्पनी के खातों में 4 वर्षों का संयंत्र खाता बनाइए जबकि खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद होते हैं।

10. 1 जनवरी, 1987 को ₹ 10,000 की मशीन क्रय की। 1 जुलाई, 1988 को ₹ 6,000 कीमत वाली एक नई मशीन खरीदी। 30 जून 1990 को 1 जुलाई, 1988 को खरीदी गई मशीन, ₹ 6,000 में बेच दी। 4 वर्षों का मशीन खाता तैयार कीजिए। यदि लेखांकन अवधि 31 दिसम्बर को समाप्त होती हो। ह्रास 10% वार्षिक दर से क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा लगाया जाएगा।

11. X लि. ने 1.1.2010 को रू 2,00,000 की मशीनें खरीदी तथा उसकी स्थापना पर ₹ 50,000 व्यय किए। मशीनों पर 20% वार्षिक से सरल रेखा पद्धति से अवक्षयण लगाना है। 30.6.2012 को 1.1.2010 में क्रय की गई एक मशीन जिसकी लागत ₹ 20,000 थी को ₹ 12,000 में बेच दिया गया।

मशीनरी खाता, मशीन निस्तारण खाता एवं ह्रास के लिए प्रावधान खाता बनाइए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 (i) कमी (ii) राशि, जीवनकाल (iii) सम्पत्तियों की जीवन अवधि
(iv) टैक्नोलॉजी

14.2 (i) समान (ii) स्थायी किस्त पद्धति अथवा मूल लागत विधि
(iii) शून्य, शुद्ध अवशेष मूल्य (iv) बाद, अधिक

14.3 (i) कमी (ii) मशीन (iii) मूल लागत पर (iv) प्रतिवर्ष आरम्भिक शेष पर (v) शून्य

14.4 I. (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

II. (i) ग (ii) ग (iii) क (iv) ख (v) ग
(vi) क (vii) ख (viii) घ (ix) ग (x) घ

क्रियाकलाप

अपने माता–पिता से विभिन्न स्थायी सम्पत्तियों जैसे टी.वी., फ्रिज, मोटरसाईकिल, कार इत्यादि की खरीदने की तारीख पूछो। उनकी जीवन अवधि के साथ प्रत्येक सम्पत्ति पर प्रत्येक वर्ष की ह्रास की राशि ज्ञात करो।